कलिविडम्बनम्
कलियुग का उपहास

नीलकंठ दीक्षित
श्रीमत् तिरुमल' लक्ष्मीकुमार (अनुवाद)

कलिविडम्बनम्

कलियुग का उपहास

नीलकंठ दीक्षित

अनुवादक की विनती

कलि विदंबनम, 17वीं शताब्दी के विद्वान और कवि नीलकंठ दीक्षित द्वारा संस्कृत में लिखित प्रसिद्ध व्यंग्य कृति है। इसके अनेक अनुवाद उपलब्ध हैं। परन्तु मैं कई नए भावनाओं को देख पाया। मैं इस अनुवाद में उनको प्रस्तुत कर रहा हूं।

श्रीमत् तिरुमल’ लक्ष्मीकुमार

कलिविडम्बनम्

न भेतव्यं न बोद्धव्यं न श्राव्यं वादिनो वचः ।
झटिति प्रतिवक्तव्यं सभासु विजिगीषुभिः ॥ १॥

असम्भ्रमो विलज्जत्वमवज्ञा प्रतिवादिनि ।
हासो राज्ञः स्तवश्चेति पञ्चैते जयहेतवः ॥ २॥

उच्चैरुद्घोष्य जेतव्यं मध्यस्थश्चेदपण्डितः ।
पण्डितो यदि तत्रैव पक्षपातोऽधिरोप्यताम् ॥ ३॥

लोभो हेतुर्धनं साध्यं दृष्टान्तस्तु पुरोहितः ।
आत्मोत्कर्षो निगमनमनुमानेष्वयं विधिः ॥ ४॥

अभ्यास्यं लज्जमानेन तत्त्वं जिज्ञासुना चिरम् ।
जिगीषुना ह्रियं त्यक्त्वा कार्यः कोलाहलो महान् ॥ ५॥

पाठनैर्ग्रन्थनिर्माणैः प्रतिष्ठा तावदाप्यते ।
एवं च तथ्यव्युत्पत्तिरायुषोऽन्ते भवेन्न वा ॥ ६

कलियुग का उपहास

सार्वजनिक विवाद जीतने के लिए विरोधी दृष्टिकोण को सुनना या समझना आवश्यक नहीं है। तुरंत प्रतिक्रिया देना ही पर्याप्त है। (1)

सार्वजनिक विवाद जीतने के पाँच उपाय हैं। दूसरे चाहे कुछ भी कहें, व्याकुलता नहीं दिखाना, उपहासपूर्ण हँसी, लज्जा हीन व्यवहार, विरोधी दृष्टिकोण पर ध्यान न देना और मध्यस्थ की प्रशंसा करना। (संस्कृत श्लोक में राजा) (2)

यदि निर्णायक जानकार नहीं है, तो विवाद जीत जाने की घोषणा करो। यदि निर्णायक जानकार है, तो कहो कि वह पक्षपाती है।(3)

लालची व्यक्ति का सबसे अच्छा उदाहरण है पुजारी। चाहे वह अपनी प्रशंसा कर रहा हो (कि वह सृष्टिकरता के मुख से पैदा हुआ है), या कह रहा हो कि वह अचूक वेदों से उदाहरण दे रहा है या कोई तार्किक व्याख्या दे रहा है या किसी घटना को भाग्य पर आरोपित कर रहा है, वह यह सब कुछ पैसे के लिए कर रहा है।(4)

सच्चे ज्ञान में इच्छा रखने वाले लोग लज्जित होकर (अपने सीमित ज्ञान से अवगत होकर) और आगे की पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं। केवल नाम कमाने की इच्छा रखने वाले लोग लज्जा छोड़कर (अपने को पूर्ण ज्ञानी सोचते हुए) तत्काल प्रचार करते हैं।(5)

अध्यापन और ग्रन्थ रचना से तुरंत मान्यता और सम्मान मिलता है, चाहे जीवन के अन्त तक मोक्ष प्राप्त हो या न हो।(6)

स्तोतारः के भविष्यन्ति मूर्खस्य जगतीतले ।
न स्तौति चेत्स्वयं च स्वं कदा तस्यास्तु निर्वृतिः ॥

वाच्यतां समयोऽतीतः स्पष्टमग्रे भविष्यति ।
इति पाठयतां ग्रन्थे काठिन्यं कुत्र वर्तते ॥ ८॥

अगतित्वमतिश्रद्धा ज्ञानाभासेन तृप्तता ।
त्रयः शिष्यगुणा ह्येते मूर्खाचार्यस्य भाग्यजाः ॥ ९॥

यदि न क्वापि विद्यायां सर्वथा क्रमते मतिः ।
मान्त्रिकास्तु भविष्यामो योगिनो यतयोऽपि वा ॥ १०॥

अविलम्बेन संसिद्धौ मान्त्रिकैराप्यते यशः ।
विलम्बे कर्मबाहुल्यं विख्याप्यावाप्यते धनम् ॥ ११॥

सुखं सुखिषु दुःखेऽपि जीवनं दुःखशालिषु ।
अनुग्रहायते येषां ते धन्याः खलु मान्त्रिकाः ॥ १२॥

दूसरों की प्रशंसा नहीं करनेवाले मूर्ख हैं। उन्हें अपनी प्रशंसा करने वाले कहां मिलेंगे? ये मूर्ख (जो दूसरों की प्रशंसा नहीं करेंगे) कब सीखेंगे?(7)

यदि प्रश्नों और शंकाओं पर शिक्षक की प्रतिक्रिया, तुरन्त स्पष्ट करने के लिए समय कम है या बाद में पढ़ाए जाने वाले भागों से संदेह दूर हो जाएगा कहना है, तो किसी भी ग्रन्थ को पढ़ाने में कठिनाई कैसे हो सकती है?(8)

मूर्ख शिक्षक कभी-कभी भाग्यशाली होते हैं और उन्हें ऐसे छात्र मिल जाते हैं जो अत्यधिक आज्ञाकारी होते हैं (प्रश्न नहीं पूछते हैं), सीमित शिक्षा से संतुष्ट होते हैं और सोचते हैं कि इससे अच्छी विकल्प नहीं है।(9)

जो लोग शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकते, वे यह जानकर आराम करते हैं कि वे मांत्रिक, योगी या संन्यासी बनतो सकते हैं।(10)

अगर मंत्र-तंत्र तुरंत काम कर जाते हैं (पूरी तरह से संयोगवश) तो मांत्रिक प्रसिद्ध होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो, और अधिक प्रयास की आवश्यकता है कहके, पैसे कमाता है।(11)

ये मांत्रिक धन्य हैं जो सुखियों के सुख और दुःखियों के दुःख से लाभ उठाते हैं। (एक समूह को सुख खोने का डर है। दूसरे को दुख दूर होने की आशा है। दोनों तांत्रिकों से सलाह लेते हैं।)(12)

यावदज्ञानतो मौनमाचारो वा विलक्षणः ।
तावन्माहात्म्यरूपेण पर्यवस्यति मान्त्रिके ॥ १३॥

चारान् विचार्य दैवज्ञैर्वक्तव्यं भूभुजां फलम् ।
ग्रहचारपरिज्ञानं तेषामावश्यकं यतः ॥ १४॥

पुत्र इत्येव पितरि कन्यकेति मातरि ।
गर्भप्रश्नेषु कथयन् दैवज्ञो विजयी भवेत् ॥ १५॥

आयुस्प्रश्ने दीर्घमायुर्वाच्यं मौहूर्तिकैर्जनैः ।
जीवन्तो बहुमन्यन्ते मृताः प्रक्ष्यन्ति कं पुनः ॥ १६॥

सर्वं कोटिद्वयोपेतं सर्वं कालद्वयावधि ।
सर्वं व्यामिश्रमिव च वक्तव्यं दैवचिन्तकैः ॥ १७॥

निर्धनानां धनावाप्तिं धनिनामधिकं धनम् ।
ब्रुवाणाः सर्वथा ग्राह्या लोकैर्ज्यौतिषिका जनाः ॥ १८॥

मांत्रिक का, अज्ञानतावश चुप रहना हो या विचित्र व्यवहार हो, उसकी महानता ही मानी जाती है।(13)

राजा सदैव भविष्य जानने को उत्सुक रहते हैं। ज्योतिषी को अपनी भविष्यवाणी बताने से पहले गुप्तचरों (राजा के कर्मचारियों) से परामर्श लेना चाहिए। (गलत भविष्यवाणी दें तो राजा दंड दे सकते हैं।)(14)

जो ज्योतिषी पिता के परामर्श पर बेटा होगा और माँ के परामर्श पर बेटी होगी कहता है, वह सफल होगा।(15)

पूछे जाने पर, ज्योतिषी को हमेशा दीर्घायु की भविष्यवाणी करनी चाहिए। जो वृद्धावस्था तक जीवित रहेगा वह ज्योतिषी को उपहार देगा। जो कम उम्र में मर गया हो, (भविष्यवाणी के विपरीत) उससे ज्योतिषी को कोई बाधा नहीं है।(16)

ज्योतिषी को हमेशा सावधानी से भ्रमित करने वाले और दोहरे अर्थ वाले वाक्यों में बोलना चाहिए। "संभव और असंभव", "थोड़ी देर में या लंबे समय के बाद" जैसे विरोधाभासी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।(17)

जो ज्योतिषी निर्धन को भविष्यवाणी करता है कि तुम स्रीघ्र ही धनी बन जावोगे और धनवान को भविष्यवाणी करता है कि तुम और भी अधिक धन अर्जित करेगा, वह सदा सफल होगा।(18)

शतस्य लाभे ताम्बूलं सहस्रस्य तु भोजनम् ।
दैवज्ञानामुपालम्भो नित्यः कार्यविपर्यये ॥ १९॥

अपि सागरपर्यन्ता विचेतव्या वसुन्धरा ।
देशो ह्यरत्निमात्रेऽपि नास्ति दैवज्ञवर्जितः ॥ २०॥

वारान् के चिद्ग्रहान् केचित्केचिद्दृक्षाणि जानते ।
त्रितयं ये विजानन्ति ते वाचस्पतयः स्वयम् ॥ २१॥

नैमित्तिकाः स्वप्नदृशो देवता उपासना इति ।
निसर्गशत्रवः सृष्टा दैवज्ञानाममी त्रयः ॥ २२॥

स्वस्थैरसाध्यरोगैश्च जन्तुभिर्नास्ति किं चन ।
कातरा दीर्घरोगाश्च भिषजां भाग्यहेतवः ॥ २३॥

नातिधैर्यं प्रदातव्यं नातिभीतिश्च रोगिणि ।
नैश्चिन्त्यान्नादिमे दानं नैराश्यादेव नान्तिमे ॥ २४॥

यदि ज्योतिषी की भविष्यवाणी का पालन किए जाने के बाद सौ (रुपये) का लाभ होता है तो उपहार के रूप में ताम्बूल मिलेगी। लाभ और भी बहुत हो तो उसे अच्छा भोजन मिलेगा । भविष्यवाणी असफल होने पर उसे हर दिन अभिशाप मिलेंगे।(19)

(पौराणिक) महासागरों से घिरे इस पूरे भूभाग में, हथेली के आकार का क्षेत्र भी नहीं मिलेगा, जहां ज्योतिष न हो।(20)

कुछ ज्योतिषी सप्ताह का दिन जानकर भविष्य बताते हैं। कई ग्रहों की स्थिति जानकर और अन्य सत्ताईस महत्वपूर्ण सितारों की स्थिति जानकर भविष्य बताते हैं। जो इन तीनों को जानकर भविष्यवाणी करता है, वह सबसे बड़ा विद्वान है। (सप्ताह के दिन सभी जानते हैं। इसी को पहले कहना सूचित करता है कि यह व्यंग्य है।)(21)

कई भविष्यवाणी करने के लिए सपनों की व्याख्या करते हैं, कई शकुन की व्याख्या करते हैं और कई देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पूजा करवाते हैं। तीनों ज्योतिषी के प्राकृति से शतृ हैं। (जैसे एक भिखारी दूसरे का शतृ होता है।)(22)

जिन की स्वास्थ्य को ठीक करने में समय लगता है और जो लोग अपने खराब स्वास्थ्य से डरते हैं, वे ही वैद्यों के पैसे कमाने का साधन होते हैं। स्वस्थ और असाध्य रोगों से पीड़ित लोग (वैद्य के) किस काम के?(23)

वैद्य रोगी को बहुत ज्यादा या बहुत कम आश्वासन न दें। ज्यादा आश्वासन से रोगी सोचेगा कि वह औषधि के बिना स्वस्थ हो जाएगा। बहुत कम आश्वासन से सोचेगा कि औषधि लेने से स्वस्थ नहीं होगा परिणाम और वह वैद्य को पैसा नहीं देगा।(24)

भैषज्यं तु यथाकामं पथ्यं तु कठिनं वदेत् ।
आरोग्यं वैद्यमाहात्म्यादन्यथात्वमपथ्यतः ॥ २५॥

निदानं रोगनामानि सात्म्यासात्म्ये चिकित्सितम् ।
सर्वमप्युपदेक्ष्यन्ति रोगिणः सदने स्त्रियः ॥ २६॥

जृम्भमाणेषु रोगेषु म्रियमाणेषु जन्तुषु ।
रोगतत्त्वेषु शनकैर्व्युत्पद्यन्ते चिकित्सकाः ॥ २७॥

प्रवर्तनार्थमारम्भे मध्ये त्वौषधहेतवे ।
बहुमानार्थमन्ते च जिहीर्षन्ति चिकित्सकाः ॥ २८॥

लिप्समानेषु वैद्येषु चिरादासाद्य रोगिणम् ।
दायादाः सम्प्ररोहन्ति दैवज्ञा मान्त्रिका अपि ॥ २९॥

रोगस्योपक्रमे सान्त्वं मध्ये किं चिद्धनव्ययः ।
शनैरनादरस्शान्तौ स्नातो वैद्यं न पश्यति ॥ ३०॥

वैद्य मन चाहे उपचार करें परन्तु रोगी के भोजन और देखभाल के संबंध में कठिन निर्देश बताए। यदि रोगी स्वस्थ हो जाए तो वैद्य महान माना जाएगा। स्वस्थ नहीं हुआ तो वैद्य कह सकता है कि भोजन और देखभाल के संबंध में निर्देशों का पालन नहीं किया गया। (लेखक को वैद्यों की क्षमता पर विश्वास नहीं है। वैद्यों और ज्योतिषियों को बराबर मानता है।)(25)

बीमारी का नाम, लक्षण, उपयुक्त औषधि और असफल होने वाले औषधि के नाम घर की महिलाएं बता सकती हैं। (यहां सूक्ष्म विडंबना है। महिलाएं परिवार के सदस्यों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। वैद्य केवल पैसे को चाहता है। रोगी पर ध्यान नहीं देता है। सीखता नहीं है। दुर्भाग्य से, वैद्यों को मानते हैं, महिलाओं को नहीं। यह पुरुष प्रधानता का संकेत है।)(26)

(दिया हुआ औषधि और उपचार का विफल होकर) रोगी और भी अस्वस्थ होकर अंत में मर जानें से वैद्य रोग का वास्तविक प्रकृति जानता है।(27)
पहले चिकित्सा प्रारंभ करने के लिए, बाद में औषधि के लिए और अंत में रोगी स्वस्थ होने के बाद पुरस्कार के रूप में वैद्य पैसा मांगता है। (28)

बहुत देर से आशापूर्वक रोगी की (और उससे मिलने वाले पैसे की) प्रतीक्षा कर रहे वैद्य के पास रोगी के साथ साथ उसके बन्धुजन, मांत्रिक एवं पुजारी (उसी पैसे के लिए) पहूंचजाते हैं।(29)

रोगी वैद्य के पास आते ही आश्वासन चाहता है। इसके बाद कुछ पैसे खर्च करता है। जैसे जैसे स्वास्थ्य सुधरती है वैसे वैसे वैद्य की उपेक्षा करने लगता है। जब वह पूरी तरह स्वस्थ होता है, वैद्य को भूल जाता है।(30)

दैवज्ञत्वं मान्त्रिकता भैषज्यं चाटुकौशलम् ।
एकैकमर्थलाभाय द्वित्रियोगस्तु दुर्लभः ॥ ३१॥

अनृतं चाटुवादश्च धनयोगो महानयम् ।
सत्यं वैदुष्यमित्येष योगो दारिद्र्यकारकः ॥ ३२॥

कातर्यं दुर्विनीतत्त्वं कार्पण्यमविवेकताम् ।
सर्वं मार्जन्ति कवयः शालीनां मुष्टिकिङ्कराः ॥ ३३॥

न कारणमपेक्षन्ते कवयः स्तोतुमुद्यताः ।
किं चिदस्तुवतां तेषां जिह्वा फुरफुरायते ॥ ३४॥

स्तुतं स्तुवन्ति कवयो न स्वतो गुणदर्शिनः ।
कीतः कश्चिदलिर्नाम कियती तत्र वर्णना ॥ ३५॥

एकैव कविता पुंसां ग्रामायाश्वाय हस्तिने ।
अन्ततोऽन्नाय वस्त्राय ताम्बूलाय च कल्पते ॥ ३६॥

ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, चिकित्सा और चापलूसी, एक एक धन के महान स्रोत हैं। इनमें से दो या तीन का एक ही व्यक्ति में विद्यमान होना अत्यंत दुर्लभ है।(31)

झूठ और चापलूसी धन कमाने के अच्छे साधन हैं। विद्वता से जुड़ी सत्यता दारिद्य को सुनिश्चित करती है।(32)

कवि एक मुट्ठी चावल के लिए बुरे आचरण, लालच, मूर्खता और कायरता को धोते (छिपाते) हैं। (वे ऐसे गुणों वाले लोगों की प्रशंसा करते हैं।)(33)

कवियों को अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा के लिए किसी कारण की आवश्यकता नहीं होती। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनकी जीभ चिड़चिड़ी हो जाती है।(34)

कवियों को वर्णन करने के लिए व्यक्तिगत अनुभव की आवश्यकता नहीं होती। मधुमक्खी की उपस्थिति का मात्र उल्लेख ही एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त है।(35)

केवल एक कविता लिखने के बाद, कवि योग्य पुरस्कार के रूप में एक पूर्ण गाँव (इससे प्राप्त कर) की अपेक्षा करता है। फिर वह धीरे-धीरे अपनी आशाओं को हाथी, घोड़े, कपड़े और भोजन तक सीमित कर देता है। आख़िर वह चबाने के लिए कुछ पान के पत्ते और छाली लेने कटिबद्ध हो जाता है।(36)

शब्दाख्यमपरं ब्रह्म सन्दर्भेण परिष्कृतम् ।
विक्रीयते कतिपयैर्वृथान्यैर्विनियुज्यते ॥ ३७॥

वर्णयन्ति नराभासान् वाणीं लब्ध्वापि ये जनाः ।
लब्ध्वापि कामधेनुं ते लाङ्गले विनियुञ्जते ॥ ३८॥

प्रशंसन्तो नराभासान् प्रलपन्तोऽन्यथान्यथा ।
कथं तरन्तु कवयः कामपारम्यवादिनः ॥ ३९॥

यत्सन्दर्भे यदुल्लेखे यद्व्यङ्ग्ये निभृतं मनः ।
समाधेरपि तज्ज्यायाः शङ्करो यदि वर्ण्यते ॥ ४०॥

गृहिणी भगिनी तस्याः श्वशुरौ श्याल इत्यपि ।
प्राणिनां कलिना सृष्टाः पञ्च प्राणा इमेऽपरे ॥ ४१॥

जामातरो भागिनेया मातुला दारबान्धवाः ।
अज्ञाता एव गृहिणां भक्ष्यन्त्याखुवद्गृहे ॥ ४२॥

शब्द ब्रह्म का स्वरूप है । (सारे ज्ञान को शब्दों में व्यक्त करना पड़ता है।) सही प्रयोग से शब्द एक सुंदर आभूषण होता है। परन्तु कई इसे बेचते हैं, अन्य इसका दुरुपयोग करते हैं। (भारतीय परंपरा ने सदा कवियों द्वारा अपनी रचना "बेचने" की निंदा की है।)(37)
काव्यात्मक क्षमता देवी सरस्वती का आशीर्वाद है। मूर्खों की प्रशंसा करने वाला कवि मूर्ख है। कामधेनु, प्राप्त हुआ तो, उससे भूमि जोत रहा है। (पौराणिक कथा में कामधेनु इच्छानुसार कुछ भी बना सकती थी।)(38)
जो लोग अस्थायी इच्छाओं को संतुष्ट करना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य मानते हैं (और उस उद्देश्य से) मूर्खों का प्रशंसा या निरर्थक बात करते हैं, वे अवरोध (अमर कवि बनने या मोक्ष प्राप्त करने का) को कैसे पार कर सकते हैं?(39)
कवि अपने मन की इच्छानुसार कुछ भी लिख सकता है, चाहे वह व्यंग्य हो या अतिशयोक्ति। यदि उस कविता की कथा वस्तु भगवान शिव हो तो वह आत्म-बोध (योग के माध्यम से प्राप्त ज्ञान) से भी बड़ा है। (अन्य कविताओं द्वारा बनाए गए संदर्भ के बिना, यह एक शिव भक्त की अभिव्यक्ति प्रतीत होगी। परन्तु इस ग्रंथ में की गयी कवि निंदा को देखते हुए, यह संभवतः एक परम व्यंग्य है। यह उन मूर्खों की निंदा करता है जो स्पष्ट बकवास लिखते हैं और भगवान शिव का नाम जोड़कर अपनी रचनाओं को महान बताते हैं।)(40)
पत्नी, साली, साला, ससुर और सास पाँच अतिरिक्त "प्राण" बन जाते हैं। (शास्त्रों के अनुसार से हमारे शरीर में पांच "प्राण" (सांस) होते हैं। संस्कृत में उनके नाम प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान हैं।)(41)
दामाद, बहनोई, मामा और पत्नी के बन्धुजन घर में चूहों की तरह हैं, जो मालिक को पता चले बिना ही खोठार में अनाज खा जाते हैं।(42)

मातुलस्य बलं माता जामातुर्दुहिता बलम् ।
श्वशुरस्य बलं भार्या स्वयमेवातिथेर्बलम् ॥ ४३॥

जामातुर्वक्रता तावद्यावच्छ्यालस्य बालता ।
प्रबुध्यमाने सारल्यं प्रबुद्धेऽस्मिन् पलायनम् ॥ ४४॥

भार्या ज्येष्ठा शिशुः श्यालः श्वश्रूः स्वातन्त्र्यवर्तिनी ।
श्वशुरस्तु प्रवासीति जामातुर्भाग्यधोरणी ॥ ४५॥

भूषणैर्वासनैः पात्रैः पुत्राणामुपलालनैः ।
सकृदागत्य गच्छन्ती कन्या निर्मार्ष्टि मन्दिरम् ॥ ४६॥

गृहिणी स्वजनं वक्ति शुष्काहारं मिताशनम् ।
पतिपक्ष्यांस्तु बह्वाशान् क्षीरपांस्तस्करानपि ॥ ४७॥

भार्ये द्वे पुत्रशालिन्यौ भगिनी पतिवर्जिता ।
अश्रान्तकलहो नाम योगोऽयं गृहमेधिनाम् ॥ ४८॥

माँ सुनिश्चित करती है कि उसके भाई घर में सम्मानित अतिथि होंगे। बेटी अपने पति के लिए ऐसा करती है। पत्नी अपने माता-पिता के लिए करती है। परन्तु अन्य सभी अतिथियों के सम्मान के लिए गृहस्थ को व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करना पड़ता है।(43)

जब तक साला भोला बच्चा है, जीजा बदमाश होगा। (धोखा देता है और चोरी करता है।) जैसे जैसे साला बुद्धिमान होने लगता है, कुटिलता बंद हो जाती है। जब साला पूरी तरह से बुद्धिमान हो जाता है तो जीजाजी (अपने घर) भाग जाते हैं।(44)

पत्नी ससुराल में बड़ी बेटी होने, उसका भाई बच्चा होने, सांस घर संभालना छोड़कर मन चाहे व्यवहार करें और ससुर विदेश में रहते हों तो दामाद को उत्तरोत्तर (पैसे के विषय में) लाभ होता है।(45)

विवाहित लड़की मायका आती है तो गहने, कपड़े, खाना पकाने के बर्तन और अपने बच्चों के लिए उपहारों से उसे धोती है (खाली करती है)।(46)

पत्नी के अनुसार उसके बन्धुजन, घर आते हैं, तो मध्यम मात्रा में साधारण भोजन से संतुष्ट होते हैं। पति के बन्धुजन बड़ी मात्रा में दूध में पका हुआ भोजन (गरिष्ठ भोजन) की मांग करते हैं। और भी और वो चोर हैं।(47)

(घर में) लड़कों को जन्म दिए हुए दो पत्नियाँ और पति के छोड़े हुए बहन एक जगह होने से निरन्तर युद्ध होगा।(48)

भार्ये द्वे बहवः पुत्रा दारिद्र्यं रोगसम्भवः ।
जीर्णौ च मातापितरावेकैकं नरकाधिकम् ॥ ४९॥

स्मृते सीदन्ति गात्राणि दृष्टे प्रज्ञा विनश्यति ।
अहो महदिदं भूतमुत्तमऋणाभिशाब्धितम् ॥ ५०॥

अन्तकोऽपि हि जन्तूनामन्तकालमपेक्षते ।
न कालनियमः कश्चिदुत्तमार्णस्य विद्यते ॥ ५१॥

न पश्यामो मुखे दंष्ट्रां न पाशं वा कराञ्जले ।
उत्तमार्णमवेक्ष्यैव तथाप्युद्वेजिते मनः ॥ ५२॥

शत्रौ सान्त्वं प्रतीकारः सर्वरोगेषु भेषजम् ।
मृत्यौ मृत्युञ्जयध्यानं दारिद्र्ये तु न किंचन ॥ ५३॥

शक्तिं करोति सञ्चारे शीतोष्णे मर्षयत्यपि ।
दीपयत्युदरे वह्निं दारिद्र्यं परमौषधम् ॥ ५४॥

दो पत्नियां, कई बेटे, दारिद्‌य, रोगी होना, बूढ़े माता-पिता; इनमें से हर एक नरक के दण्डों से भी अधिक दुःखदायक हैं।(49)

ऋणदाता नाम का यह भूत बहुत ही भयानक है। याद आतेही व्यक्ति कांपता है और उसे देखते ही पागल होता है।(50)

यमराज मानवों को केवल मरने से पहले दीखता है। ऋणदाता को तो ऐसा कोई कालनियम नहीं होता। (51)

ऋणदाता के मुंह में न लंबे दांत दिखते हैं न तो यमराज के जैसे उसके हाथ में प्राण निकलने वाला पाश है। परन्तु उसको देखते ही मन भयभीत हो जाता है।(52)

शत्रुता का उपाय सांत्वना है। हर रोग के लिए औषधि है। मृत्यु के लिए भी, शिव, जो मृत्यु को हरा देता है, की प्रार्थना करना एक उपाय है। दारिद्र्य का अंत करने वाला कोई उपाय नहीं है।(53)

दारिद्र्य एक महान औषधि है। यह घूमने को (भीख माँगने के लिए) शक्ति देता है। यह व्यक्ति को गर्मी और सर्दी सहन करने में सक्षम बनाता है (क्योंकि बचाव के लिए न तो कपड़ा है और न ही घर)। यह पेट में आग (भूख) पैदा करता है।(54)

गिरं स्खलन्तीं मीलन्तीं दृष्टिं पादौ विसंस्थुलौ ।
प्रोत्साहयति याच्ञायां राजाज्ञेव दरिद्रता ॥ ५५॥

जीर्यन्ति राजविद्वेषा जीर्यन्त्यविहितान्यपि ।
आकिञ्चन्यबलाढ्यानामन्ततोऽश्मापि जीर्यति ॥ ५६॥

नास्य चोरा न पिशुना न दायादा न पार्थिवाः ।
दैन्यं राज्यादपि ज्यायो यदि तत्त्वं प्रबुध्यते ॥ ५७॥

प्रकाशयत्यहङ्कारं प्रवर्तयति तस्करान् ।
प्रोत्साहयति दायादांल्लाक्ष्मीः किं चिदुपस्थिता ॥ ५८॥

विडम्बयन्ति ये नित्यं विदग्धान् धनिनो जनाः ।
त एव तु विडम्ब्यन्ते श्रिया किञ्चिदुपेक्षिताः ॥ ५९॥

प्रामाण्यबुद्धिः स्तोत्रेषु देवताबुद्धिरात्मनि ।
कीटबुद्धिर्मनुष्येषु नूतनायाः श्रियः फलम् ॥ ६०॥

अस्पष्ट वाणी, आंखें पूरी तरह से खोलने में असमर्थता और हाथ-पैर कांपना राजा के आदेश सुनने पर ही नहीं, दरिद्रता में भीख मांगने पर भी होते हैं।(55)

राजा का क्रोध दरिद्र को नहीं हिलाता। समाज उसे अपने मानदंडों का उल्लंघन करने और निषिद्ध कार्य करने से नहीं रोक पाता। दरिद्र पत्थर भी (जो कुछ मिला) खा सकता है।(56)

दरिद्रता राजसत्ता से अधिक शक्तिशाली है। चोरों, पीठ में छुरा घोंपने वालों, सिंहासन के दावेदारों या आक्रमणकारी राजाओं का उसे कोई डर नहीं है।(57)

जो थोड़ासा भी धन संचय करता है, वह चोरों को उत्साहित करता है, बन्धुजन को सहायता मांगने के लिए प्रेरित करता है और अहंकार प्रकट करता है।(58)

जो धनवान होने पर विद्वानों का उपहास करता था, वह धन का सबसे छोटा भाग खोते ही उपहास पाता है। (धनी लोग जब भी अपनी संपत्ति से छोटा भाग खोते ही रोना शुरू करते हैं और उपहास को आमंत्रित करते हैं।)(59)

चापलूसी को सच मानना, स्वयं को दैवीय मानना और दूसरों को कीड़े के समान देखना, ये अभी अभी धनी बने लोगों के गुण हैं।(60)

शृण्वन्त एव पृच्छन्ति पश्यन्तोऽपि न जानते ।
विडम्बनानि धनिकाः स्तोत्राणीत्येव मन्वते ॥ ६१॥

आवृत्य श्रीमदेनान्धानन्योन्यकृतसंविदः ।
स्वैरं हसन्ति पार्श्वस्था बालोन्मत्तपिशाचवत् ॥ ६२॥

स्तोतव्यैः स्तूयन्ते नित्यं सेवनीयैश्च सेव्यते ।
न बिभेति न जिह्रेति तथापि धनिको जनः ॥ ६३॥

क्षणमात्रं ग्रहावेशो याममात्रं सुरामदः ।
लक्ष्मीमदस्तु मूर्खाणामादेहमनुवर्तते ॥ ६४॥

श्रीर्मासमर्धमासं वा चेष्टित्वा विनिवर्तते ।
विकारस्तु तदारब्धो नित्यं लशुनगन्धवत् ॥ ६५॥

कण्टे मदः कोद्रवजो हृदि ताम्बूलजो मदः ।
लक्ष्मीमदस्तु सर्वाङ्गे पुत्रदारमुखेष्वपि ॥ ६६॥

धनी लोग (बताई जा रही बात को) सुने बिना सवाल पूछते हैं। वे देखते हैं लेकिन निरीक्षण नहीं करते। व्यंग्य को प्रशंसा समझ लेते हैं।(61)

अपने धन के घमंड में डूबे हुए धनवान लोग केवल एक-दूसरे को समझते हैं और (निर्धनों को देखकर) अनियंत्रित रूप से हंसते हैं, मानों वे पागल या छोटे बच्चे या भूत हों।(62)

पूजा और प्रार्थना के पात्र लोगों से प्रशंसा और आदेशपालन स्वीकार करते हुए न तो धनवान संकोच करते हैं न शर्म दिखाते हैं।(63)

व्यक्ति पर भूत का प्रभाव क्षणिक होता है, मद्य का कुछ घंटों तक। परन्तु अज्ञानी धन के मद में जीवन भर रहता है।(64)

धन आदमी के पास थोड़ी देर ही टिकता है परन्तु उससे मिला घमंड लहसुन के गंध की तरह हमेशा के लिए रहता है।(65)

मद्य का प्रभाव गले तक होती है, पान चबाने का दिल तक। परन्तु धनमद शरीर के सभी अंगों पर प्रभाव डालता है। यहां तक कि वह पत्नी और बच्चों के मुंह तक भी पहुंच जाता है।(66)

यत्रासीदस्ति वा लक्ष्मीस्तत्रोन्मदः प्रवर्तताम् ।
कुलेऽप्यवतरत्येष कुष्ठापस्मारवत्कथम् ॥ ६७॥

अध्यापयन्ति शास्त्राणि तृणीकुर्वन्ति पण्डितान् ।
विस्मारयन्ति जातिं स्वां वराटाः पञ्चषा करे ॥ ६८

बिभर्तु भृत्यान् धनिको दत्तां वा देयमर्थिषु ।
यावद्याचकसाधर्म्यं तावल्लोको न मृष्यति ॥ ६९॥

धनभारो हि लोकस्य पिशुनैरेव धार्यते ।
कथं ते तं लघूकर्तुं यतन्तेऽपरथा स्वतः ॥ ७०॥

श्रमानुरूपं पिशुने किमुपक्रियते नृपैः ।
द्विगुणं त्रिगुणं चैव कृतान्तो लालयिष्यति ॥ ७१॥

गोकर्णे भद्रकर्णे च जपो दुष्कर्मनाशनः ।
राजकर्णे जपः सद्यः सर्वकर्मविनाशनः ॥ ७२॥

जहां धन हो, चाहे नया या पुराना, बन्धुओं में घमंड और असंयमित बातें कोढ़ की तरह फैलती हुई दीखती हैं।(67)

हाथ में मात्र पांच या छह सिक्के व्यक्ति को जीवन में अपना स्थान भूल जाने, ज्ञानियों को अस्वीकार करने और ज्ञान के सभी विषयों में उपदेश देने को प्रेरित करेंगे।(68)

सेवकों को और भिखारियों को उदारतापूर्वक धन देनेवाले को भी सम्मान नहीं मिलेगा अगर उसका व्यवहार भिखारी की तरह हो।(69)

चवाई मानता है कि संसार के सारी संपत्ति का भार अपने ऊपर है। इसलिए उसको कम करने का प्रयत्न करता है। (वह ऐसी कहानियाँ सुनाता है जिससे दूसरों का संपत्ति का नष्ट हो।)(70)

राजा चवाई को क्या (दंड) दे सकता है? जो देना है, यमराज कई गुना देगा। (71)

गोकर्ण और भद्रकर्ण तीर्थों में शिव का नाम जपने से पाप नष्ट हो जाते हैं। राजा के कान में (उपयुक्त) शब्द बोलने से (लक्ष्य व्यक्ति का) सब कुछ नष्ट हो जाता है।(72)

न स्वार्थं किञ्चिदिच्छन्ति न प्रेर्यन्ते च केन चित् ।
परार्थेषु प्रवर्तन्ते शठाः सन्तश्च तुल्यवत् ॥ ७३॥

कालान्तरे ह्यनर्थाय गृध्रो गेहोपरि स्थितः ।
खलो गृहसमीपस्थः सद्योऽनर्थाय देहिनाम् ॥ ७४॥

शुष्कोपवासो धर्मेषु भैषज्येषु च लङ्घनम् ।
जपयज्ञश्च यज्ञेषु रोचते लोभशालिनाम् ॥ ७५॥

किं वक्ष्यतीव धनिकाद्यावदुद्विजतेऽधनः ।
किं प्रक्ष्यतीति लुब्धोऽपि तावदुद्विजते ततः ॥ ७६॥

सर्वमातिथ्यशास्त्रार्थं साक्षात्कुर्वन्ति लोभिनः ।
भिक्षाकबलमेकैकं ये हि पश्यन्ति मेरुवत् ॥ ७७॥

धनपालः पिशाचो हि दत्ते स्वामिन्युपस्थिते ।
धनलुब्धः पिशाचस्तु न कस्मै चन दित्सते ॥ ७८॥

परोपकारी और चवाई के बीच समानताएं हैं। दोनों को अपने कार्यों के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। दोनों स्वार्थी नहीं हैं और दोनों केवल दूसरों के लिए काम करते हैं।(73)

घर पर चील का उतरना भविष्य में दुर्भाग्य लाता है। घर के पास दुष्ट व्यक्ति रहने से ऐसा दुर्भाग्य तुरंत होना सुनिश्चित है।(74)

लोभि का प्रिय धार्माचरण एवं औषधि उपवास है।(आयुर्वेद के अनुसार उपवास एक महान औषधि है।) इसी तरह वह अन्य यज्ञ (जिसमें पैसे खर्च होते हैं) करने से जप को प्राथमिकता देता है।(75)

व्याकुल होते हैं कि धनवान हमें कुछ न कुछ कहेगा। (इसलिए कि सहन करना पड़ेगा) मन इस बात से भी व्याकुल रहता है कि यह लोभी हमसे क्या मांगेगा।(76)

आतिथ्य का वास्तविक मूल्य हमें लोभी समझाते हैं जो अतिथियों को खिलाए गए भोजन के प्रत्येक निवाले को सोने का पहाड़ मानते हैं।(77)

भूत धन की रक्षा करता है और उस धन को सच्चे स्वामी को सौंप देता है। लोभी वह भूत है जो कभी किसी को धन नहीं सौंपता।(78)

दातारोऽर्थिभिरर्थ्यन्ते दातृभिः पुनोऽर्थिनः ।
कर्तृकर्मव्यतीहारादहो निम्नोन्नतं कियत् ॥ ७९॥

स्वस्मिन्नसति नार्थस्य रक्षकः सम्भवेदिति ।
निश्चित्यैवं स्वयमपि भुङ्क्ते लुब्धः कथं चन ॥ ८०॥

प्रस्थास्यमानः प्रविशेत्प्रतिष्ठेत दिने दिने ।
विचित्रानुल्लिखेद्विघ्नांस्तिष्ठासुरतिथिश्चिरम् ॥ ८१॥

प्रदीयते विदुष्येकं कवौ दश नटे शतम् ।
सहस्रं दाम्भिके लोके श्रोत्रिये तु न किञ्चन ॥ ८२॥

घटकं सम्यगाराध्य वैराग्यं परमं वहेत् ।
तावदर्थाः प्रसिद्ध्यन्ति यावच्चापलमावृतम् ॥ ८३॥

एकतः सर्वशास्त्राणि तुलसीकाष्ठमेकतः ।
वक्तव्यं किं चिदित्युक्तं वस्तुतस्तुलसी परा ॥ ८४॥

दाता प्राप्तकर्ताओं को (उनकी उदारता दिखाते हुए) खोजते हैं। प्राप्तकर्ता भी दाताओं को खोजते हैं। पहले वाक्य में दाता कर्ता है, दूसरे में दाता कर्म है। क्या इस आदान-प्रदान से असमानताएं बदल जाएंगी? (भले ही खोज दाता या प्राप्तकर्ता द्वारा की गई हो, उनकी स्थिति में असमानता नहीं बदलेगी।)(79)

मैं न रहूँ तो मेरे धन का कोई रक्षक न होगा । ऐसा सोचकर लोभी खाना खाता है। (अपने भोजन के लिए धन खर्च करता है।)(80)

वह अतिथि जो सदा के लिए रहना चाहता है उसे आज ही जा रहा हूं कहते हुए प्रवेश करना चाहिए। हर दिन, जा नहीं पाने के लिए विचित्र कारण बताते रहना है।(81)

इस संसार में पढ़े-लिखे को एक रुपया, कवि को दस रुपये, अभिनेता को सौ रुपये और पाखंडी को एक हजार रुपये मिलते हैं। वैदिक विद्वान को कोई कुछ नहीं देता।(82)

आयोजक के साथ (पहले ही) व्यवस्था करके वांछित धन आदि प्राप्त होने तक विरागी रहने का नाटक करना चाहिए।(83)

सारे शास्त्रों की तुलना में सूखी तुलसी की पुली महान है। (ऐसा प्रतीत होता है कि तुलसी की प्रशंसा की जा रही है। लेकिन यह विडंबनापूर्ण है। इसीलिए काष्ठ (दाह संस्कार उपयोगी छड़ी) शब्द का प्रयोग किया गया है। सारे शास्त्रों की अवहेलन की जा रही है। पूर्ववर्ती श्लोकों में ज्योतिष एवं चिकित्सा शास्त्रों की विडंबना की गई। अब सारे शास्त्रों को।)(84)

विस्मृतं वाहटेनेदं तुलस्याः पठता गुणन् ।
विश्वसम्मोहिनी वित्त दायिनीति गुणद्वयम् ॥ ८५॥

कौपीनं भसितालेपो दर्भा+रुद्राक्षमालिका ।
मौनमेकासिका चेति मूर्खसञ्जीवनानि षट् ॥ ८६॥

वासः पुण्येषु तीर्थेषु प्रसिद्धश्च मृतो गुरुः ।
अध्यापनावृत्तयश्च कीर्तनीया धनार्थिभिः ॥ ८७॥

मन्त्रभ्रंशे सम्प्रदायः प्रयोगश्च्युतसङ्कृतौ ।
देशधर्मस्त्वनाचारे पृच्छतां सिद्धमुत्तरम् ॥ ८८॥

यथा जानन्ति बहवो यथा वक्ष्यन्ति दातरि ।
तथा धर्मं चरेत्सर्वं न वृथा किंचिदाचरेत् ॥ ८९॥

सदा जपपटो हस्ते मध्ये मध्येऽक्षिमीलनम् ।
सर्वं ब्रह्मेति वादश्च सद्यस्प्रत्ययहेतवः ॥ ९०॥

वाहट भट्ट तुलसी के दो गुणों की गिनती करना भूल गया। वे हैं, संसार में सबको प्रभावित करना और धन-संपदा प्रदान करना। (इस विडम्बना को समझने के लिए याद रखना है कि वाहट भट्ट ने आयुर्वेद का ग्रन्थ लिखा था। इस श्लोक मे उन लोगों की विडंबना है जो तुलसी की माला पहनकर सभी को प्रभावित करेते हैं और पैसे कमाते हैं। (ग्रन्थ कलि विडंबना होने की कारण कोई अपवाद भी नहीं है, कि सच्चे भक्त भी तुलसी पहनते हैं।(85)

मूर्खों की ये छह संजीवनी जड़ी-बूटियाँ हैं। कौपीन, भस्म, दर्भ, रुद्राक्ष माला, मौन रहना और स्थिर बैठना। (ये तपस्वी के लक्षण हैं। मूर्ख के लिए बिना काम किए जीने के साधन हैं।(86)

जो शिष्यों को पढ़ाकर धन कमाना चाहते हैं, उन के लिए पवित्र तीर्थस्थलों में रहना एवं दावा करना कि एक प्रसिद्ध मृत व्यक्ति उनका गुरु थे आवश्यक हैं। (तीर्थयात्रियों के वास्ते नाम प्रसिद्ध होगा। मृत गुरु कह नहीं सकता कि यह मेरा शिष्य नहीं है।)(87)

किसी मंत्र के गलत उच्चारण के बारे में पूछने पर यह तो हमारी परंपरा है कहना और संस्कृत व्याकरण संबंधी त्रुटि बताने पर यह हमारी राष्ट्रीय परंपरा कहना अखंडनीय उत्तर हैं।(88)

धार्मिक कार्य ऐसा ही किया जाना है कि बहुत से लोग जानकर धनी लोगों को बताएं (और वो धन दें), अप्रभावी रूप में नहीं।(89)

जपमाला की थैली सदा हाथ में रखकर, बीच बीच में आँखें आधी बंद करके, सब कुछ ब्रह्म है कहते रहने से व्यक्ति महान माना जाता है।(90)

आमध्याह्नं नदीवासः समाजे देवतार्चनम् ।
सततं शुचिवेषश्च इत्येतद्दम्भस्य जीवितम् ॥ ९१॥

तावद्दीर्घं नित्यकर्म यावत्स्याद्द्रष्टृमेलनम् ।
तावत्सङ्क्षिप्यते सर्वं यावद्द्रष्टा न विद्यते ॥ ९२॥

आनन्दबाष्परोमाञ्चौ यस्य स्वेच्छावशंवदौ ।
किं तस्य साधनैरन्यैः किङ्कराः सर्वपार्थिवाः ॥ ९३॥

दण्ड्यमाना विकुर्वन्ति लाल्यमानास्ततस्तराम् ।
दुर्जनानामतो न्याय्यं दूरादेव विसर्जनम् ॥ ९४॥

अदानमीषद्दानं च किञ्चित्कोपाय दुर्धियाम् ।
सम्पूर्णदानं प्रकृतिर्विरामो वैरकारणम् ॥ ९५॥

ज्यायानसंस्तवो दुष्टैरीर्ष्यायै संस्तवः पुनः ।
अपत्यसम्बन्धविधिः स्वानर्थायैव केवलम् ॥ ९६॥

दोपहर तक नदी में रहना (पानी में खडे होकर जप करना), चौकों में भगवान की पूजा करना और सदा साफ कपड़े ही पहनना पाखंडी का जीवन है।(91)

प्रेक्षकों के रहने तक दैनिक पूजा और धार्मिक गतिविधियाँ जारी रहेंगी। यदि कोई देखने वाला न हो तो सब कुछ संक्षेप में ही समाप्त हो जाता है।(92)

अगर व्यक्ति इच्छानुसार आंखों में आनंद के आंसू लाकर रोमांचक बन सकता है तो किसी और उपकरण के बिना ही सभी राजा उसके दास बन जाते हैं।(93)

दुष्ट को दंड दे तो प्रतीकात्मक काम करेंगे। प्यार दिखाते तो और भी कष्ट पहुंचायेंगे। दुष्ट से दूर ही रह सकते हैं।(94)

दुष्ट को माँगा हुआ न दे, अथवा कम दे तो क्रोधित होता है। जो माँगा दिया गया तो दुबारा माँगेगा। एक बार देकर बंद कर दिया तो शतृ बन जाता है।(95)

दुष्ट अनजाने ही अच्छा है। उससे थोड़ी सी भी संगति से ईर्ष्या उत्पन्न होती है। दुष्टों से विवाह जैसे स्थायी संबंध केवल विनाश की ओर ले जायेंगे।(96)

ज्ञातेयं ज्ञानहीनत्वं पिशुनत्वं दरिद्रता ।
मिलन्ति यदि चत्वारि तद्दिशेऽपि नमो नमः ॥ ९७॥

परच्छिद्रेषु हृदयं परवार्तासु च श्रवः ।
परमर्मासु वाचं च खलानामसृजद्विधिः ॥ ९८॥

विषेण पुच्छलग्नेन वृश्चिकः प्राणिनामिव ।
कलिना दशमांशेन सर्वः कालोऽपि दारुणः ॥ ९९॥

यत्र भार्यागिरो वेदा यत्र धर्मोऽर्थसाधनम् ।
यत्र स्वप्रतिभा मानं तस्मै श्रीकलये नमः ॥ १००॥

काममस्तु जगत्सर्वं कालस्यास्य वशंवदम् ।
कालकालं प्रपन्नानां कालः किं नः करिष्यति? ॥१०१॥

कविना नीलकण्ठेन कलेरेतद्विडम्बनम् ।
रचितं विदुषां प्रीत्यै राजास्थानानुमोदनम् ॥ १०२॥

—------ कलि विडम्बनम् सम्पूर्णम् —-------

बुद्धिहीन, चुगली और दरिद्र बंधुजन से इतना दूर रहना चाहिए कि जिस दिशा में चारों गुण हो, उस दिशा को भी नमस्कार करना है (और उस ओर भी नहीं देखना है)।(97)

सदैव दूसरों की गलतियों के बारे में सोचना, दूसरों के बारे में सुनना, दूसरों के रहस्यों को (सबको) बताना, ब्रह्मा द्वारा दुष्टों के लिए बनाए गये गुण हैं।(98)

कलि का (कलियुग में लोगों के दुर्गुणों का) दसवाँ भाग लोगों के लिए बिच्छू की पूँछ के विष से भी अधिक भयानक होता है।(99)

उस कलियुग को नमस्कार जिसमें पत्नी की बोली वेद है (जिसका उल्लंघन नहीं कर सकते), धर्म (केवल) धन कमाने का मार्ग है, और स्वयं की बुद्धि ही सत्य की परिभाषा है।(100)

सारा संसार (ब्रह्म का) वासना है। (लेकिन) यह मृत्यु के अधीन है। हम मृत्यु के ऊपर विजयी हुए व्यक्ति (शिव) के दास हैं। मृत्यु हमारा क्या कर सकता है?(101)

कलिकाल का यह विडंबना नीलकंठ कवि द्वारा विद्वानों और राजसभाओं के आनंद के लिए रचा गया था।(102)

—------ कलि विडम्बनम् सम्पूर्णम् —-------